भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 2 | सोमवार, 26.2.1996 | वार्षिक चंदा : 50.00

ब्रह्मवाक्

पहचान-अफसोस-आश्वासन

अनादि काल से मानव सतत् अंतर्नाद करता आया है कि प्रभु की पहचान कब हो? सनातन सतत् जीवन और मृत्यु के ये द्वंद्व वही पुरुषार्थ और प्रारब्ध। अति महाभाग्य प्रगटे, तब संग मिलता है। पुरुषार्थ करने से सत्य का मिलाप होता है। निष्कपट भाव से अंतराय के बिना निर्मानी दास भाव से मन, प्राण और शरीर वड़वानल अग्नि समान गुरु को सौंपा जाए, तब इसी जीवन में ही प्रगट प्रभु की पहचान होती है और सत्संग अखंड-कायम रखने से प्रत्यक्ष भगवान के सुख का अनुभव होता है। इस लोक में और परलोक में सच्चा सत्संग और सुहृदभाव अपरिमित बल दे और मूलअक्षर के संग से ब्रह्मसंज्ञा को पाया जीव, कारण शरीर के भावों से होकर, महाप्रभु के साधर्म्यपन को देह रहते ही पाये, उसके लिए तो उसे खत्म-याहोम हो ही जाना पड़ता है। उसके संग से मायिक में से अमायिक बनना पड़े। निर्वासनिक होकर ऐसे गुरु का सेवन किया हो, तो ही यह बल, महिमा और स्थिति झेल पाये। इस लोक में ऐसे गुरु का सान्निध्य वही अक्षरधाम-वही धाम का पति और मुक्तों के मण्डल। मुक्ति के भेद के अनुसार ढूंढना कुछ नहीं रहता। पहचाना नहीं जाता-वही अज्ञान ! बिना परिश्रम के कहां से मिलेंगे। मिले तो पचे नहीं-दस्त हो जाएं। सो, पुरुषार्थ तो चाहिए ही - श्रेयार्थी के रूप में सच्चे मन से। हमें प्रगट प्रभु मिले थे पर- जैसे थे वैसे पहचाने नहीं गए।

- ❋ हम में जब तक ऐसे बल की लगन नहीं लगती,
- ❋ जब तक निर्माल्यपन, अधूरापन लगता है,
- ❋ जब तक स्वरुपनिष्ठा में ही चर्चाएं होती हैं,
- ❋ शंकाएँ रहती हैं,
- ❋ संकल्प विकल्प होते हैं

तब तक पू. शास्त्री महाराज की सच्ची पहचान हुई नहीं कही जाए। प्रभु के पास तो सब कुछ निगुर्ण! लेकिन उनका कहना- उनकी अमृतवाणी हमसे झेली नहीं जा सकी। धधकते लोहे पर वह अमृत पानी छम्म होकर अदृश्य हो गया। कालु मछली में जैसे मोती होता है, वैसी जीव में असर नहीं हुई और इतने में तो भगवान चल बसे ! हमारे ही पाप के कारण- क्योंकि हम उनसे केवल धोखाधड़ी करते रहे। बड़े पुरुष हैं, नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं, मीनीस्टर्स मानते हैं, कुछ सिद्धि होगी, यूं केवल स्वार्थवृत्ति से हम जुड़े और जितना हमारा स्वार्थ सिद्ध हुआ, उतनी महिमा हमने समझी। गिने-चुने सत्संगीओं को छोड़कर-हमने उनकी स्वरुपनिष्ठा इन्द्रियों में ही जानी, लेकिन वह अंतःकरण में नहीं आई, तो जीव में आने की तो बात ही कहां। हर एक वस्तु को मापने की फुटपट्टी होती है। हमारे आचरण और वर्तन का-सत्संग में हमारे व्यवहार के लक्षणों से सभी को पता चलता है ही। अंतर

में जानने के बावजूद प्रभु की दृष्टि होते हुए, अभागे यादवों की तरह हमसे प्रभु जैसे थे, वैसे पहचाने नहीं गए।

थोड़ी समझ आई। सत्संग में आखिर-आखिर में पुरुषोत्तमभाव जाना। मेरे अनुभव में वह आया। 'साधुरुप में श्रीजी ही हैं'- यह बात मेरे यूरोप जाने से पहले योगीजी ने बात कर सचोट समझायी। अत्यं प्रकरण 1 के मुताबिक जिसकी जैसी ग्रंथि-वैसे ही प्रभु बात करते हैं। यूं यह बात मर्म में ही समझाई जाती है। पर मुझे तो बार-बार चमत्कार से, दर्शनों से और सामने बिठाकर आखिरी कक्षा की बातें करी हैं और वे सच्ची ही हैं। वचनामृतों एवं लक्षणों और अनुभव से सच्चाई सिद्ध हो सकती है। सभी प्रसंग यहां कैसे लिखने? लेकिन इतना स्पष्ट है कि वे स्वयं श्रीजी ही थे, यह मेरे अनुभव की बात है। क्योंकि अनेक के अन्तर पकड़ कर समर्थ को भी काबू में रखें और मूल कारण भावों को बदलकर दृष्टि से ही अवयव बदले और स्वभाव टाले, वह पुरुषोत्तम के सिवा इस कलयुग में दूसरे किसी का कार्य हो सकता ही नहीं। यह कोई कहानियां नहीं। प्रत्यक्ष उदाहरण-श्रीजी के वक्त में लुटेरे जैसे सत्संगी हुए को हम जानते हैं, वैसे हमारे सत्संग में भी अनेक उदाहरण हैं। नाम जिसे चाहिए उसे (Personally) दूंगा। दूसरा लक्षण काम, क्रोध, मद, मत्सर जिसे ऋषि-मुनि तप करने पर भी नहीं जीत पाये, वे दोष सत्संगीओं के टले हैं और आपत्काल में रक्षा हुई है। वह मैंने स्वयं अनुभव किया है। इससे भी अधिक उनके प्रताप से ही पू. नंदाजी जैसे चंपकलालभाई, मगनभाई, विनायकराय, आशाभाई, काशीबहन, राजकोट वाले राणीबा, जेठीबा, सोनाबा वगैरह महासमर्थ बल वाले थोड़े से समय में ही हो गए- हम देखते हैं। यूं बहुत उदाहरण दिये जा सकते है। एक पल में ही लोया के 3 में बताए मुताबिक एक लाख रुपये इकट्ठे करने की शक्ति प्रभु के सिवा दूसरे की नहीं हो सकती, लेकिन उसे तो मूल अक्षर गुणातीतानंदस्वामी और श्रीजी यूं मिलकर स्वामी-नारायण-भक्त और भगवान का अनादि आदर्श समझाना था। दूसरे भक्तों की मूर्ति हो और आनादि की नहीं? इसी हेतु उन्होंने मंदिरों को बनाकर आदर्श प्रतीक खड़े करे और हर एक को सच्ची उपासना और गुणातीत आज्ञा समझायी। लेकिन हमने पूरा पहचाना नहीं।

और

पहचाना, तो वर्ता नहीं गया

और

वर्ते, तो टिक कर पचा नहीं पाये।

वर्ना तो जाये ही कैसे? आज अफसोस है। अंधेपन से हमने मान लिया है कि प्रभु सब करेंगे। लेकिन-पुरुषार्थ हमें ही करना है।

तो, दूसरों के अवगुणों को लेकर खोदने के सिवा और क्या करते हैं?

जीव के कल्याण की गरज से सत्संग में कितने आये थे? कितनों से निर्मानीभाव से सेवा होती है? कितनों ने प्रभु को लाचार किया?

और अब भी.....

पू. योगीजी को कितना करते हैं?

आशीष सभी को चाहिए परन्तु उसकी आज्ञा तो पाली नहीं जाती।

उन्हें रक्षा करनी भी हो पर कहां से बने?

काल, कर्म, माया से परे किस प्रकार करे?

यह बनावट कब छूटेगी?

आश्वासन एक ही है कि-पू. योगीजी हैं। गुरुजी तो आए नहीं, गये भी नहीं। वे तो योगीजी की पहचान करा गए। गढडा में बिठा गए और सनातन भजन का अपूर्व आदर्श भक्त और भगवान का सौंप गए। करना हमें है। योगीजी ही भगवान की पहचान करायेंगे।

कब मन सौंपेंगे?

देहाभिमान, ममत्व और दूसरों के दोष देखने छोड़कर सच्चे सत्संग में योगीजी के साथ कब जुड़ेंगे? हमारे घर-मंदिर और अंतःकरण में यह प्रगट ही अक्षरधाम की आवाज़ कब गूंजेगी?

यहां प्रकाश है, फिर भी आंखों से पट्टी क्यों नहीं छोड़ते? बहुत ही चिल्ला-चिल्ला कर दूसरे को सत्संगी करना, नगाड़े बजाया करने के बजाय हमारा ही घर कब सुधरेगा? प्रभु को तो सच्चा सत्संगी हो, तब भी काफी है। सो भजन करते-करते हमारे चरित्र बल से हमारे जीवन

की भावनाओं से और सच्चे गुणातीत ज्ञान से कब प्रतीकरुप बनेंगे?

पू. योगीजी हैं। हो पाए उतना करें और दूसरी झंझट करने के बजाय, हमारा ज्ञान सच्चा होगा तो दूसरों को समझ आयेगा और भाव बैठेगा व स्थिति होने पर पचेगा। जबरदस्ती संदतर छोड़ने जैसी है। हमारा ही पक्का क्यों नही करें? पूछने आए उसे जरूर भाव से समझाएं, लेकिन उसका मोह नहीं होना चाहिए। पू. योगीजी की यूं अहोर्निश सेवा हो और सत्संग कायम रहे यही अभ्यर्थना।

प.पू. काकाजी महाराज

अगस्त, 1951

✡✡✡✡✡

अहो हो ! प.पू. आरविहारीस्वामिजी का भव्य हीरक महोत्सव

समग्र गुणातीत समाज में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के नाम से पहचाने जाने वाले व प्रभुसमान प्राणपुरुष प.पू. पप्पाजी के यहां पुत्र के रुप में जन्म लेकर धरती पर पधारे..... उन्हीं की 60 वीं जयंती का मंगल अवसर.....

जन्म से ही स्वामिनारायण धर्म का अनुयायी परिवार, संस्कार, पवित्रता, प्रगट की निष्ठा, प्रभुता आदि तो माँ-बाप से वारसे में ही मिले। बड़े होने पर गुरुहरि योगीजी महाराज के मूलभूत संकल्प-शिक्षित् साधु बनाने की योजना में जुड़कर 1961 में साधु की दीक्षा ली। गुरुहरि योगीजी महाराज ने नाम भी कैसा अनूठा दिया-**साधु अक्षरविहारीदास** यानि- **अक्षर में विहार करने वाला।** आज इसी नाम को पूर्णतया सार्थक करके गुरुहरि योगीजी महाराज के नाम को तो रोशन किया ही..... साथ ही साथ अनंत के जीवनप्राण, मोक्ष के दातारुप बनकर अनेक संतों, गृहस्थों, युवकों के हृदय सिंहासन पर प्रत्यक्ष स्वरुप के स्थान पर विराजमान गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रसादी स्थान बड़ौदा के नजदीक सांकरदा केन्द्र के अधिष्ठाता हैं। धन्य-धन्य भगवान स्वामिनारायण को जिन्होने धरती पर ऐसे गुणातीत संतों की परम्परा अखंडित बहती रखी.....

गुरुहरि योगीजी महाराज ने चैतन्य मंदिर बनाने का बीड़ा उठाया..... उस समय उनकी आज्ञा से जो-जो युवक साधु बने उन्हें बापा ने वचन दिया कि-**पात्र भी मैं बनाऊंगा और उसमें ब्रह्मरस भी मैं भरुंगा।** बस इसी एक बचन में अटल विश्वास रखकर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने अपने जीवन की साधना शुरू की। शुरुआत से ही दासत्वभक्ति और गुणातीत में मूलभूत सिद्धान्त-**संबंध वाला चाहे वह कैसा भी स्वभावयुक्त-दोषयुक्त क्यों न हो? पर उसका दोष नहीं देखना**...यही एक पकड़े रखा और संबंध में आए चैतन्यों की प्रत्यक्षस्वरुप में जोड़ने की भावना से संभाल करते रहे.....जिसके फलस्वरुप आज निरन्तर अक्षरधाम की भूमिका में रहकर अद्भुत दिव्य जीवन जी रहे हैं व अनेक चैतन्यों को प्रभु के रास्ते पर अग्रसर करने अविरत परिश्रम कर रहे हैं.....

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी स्वयं का सामर्थ्य छुपा कर कैसा अद्भुत जीवन जी रहे हैं, उसकी स्पष्ट झांकी समय-समय पर गुणातीत स्वरूपों द्वारा अन्तर से फिसले इन उद्गारों से दिखाई पड़ती है। आईए, हम सभी इन आशीर्वाद वचनों को निहार कर स्वयं को धन्य करें.....

. स्वामी अक्षरविहारीस्वामिजी को सत्संग मंडल में निर्दोषबुद्धि कायम रहेगी तथा सदा सुखी रहेंगे, वैसे हमारे अंतर के शुभ आशीर्वाद

–लि. साधु ज्ञानजीवनदासजी के शुभ आशीर्वाद हैं

10.2.95(ब्र.स्व.योगीजी महाराज)

❁ अक्षरविहारीस्वामिजी की निर्दोषबुद्धि बहुत

जबरदस्त व सहज स्वाभाविक जीवन। निर्दोषबुद्धि का एक ही नियम-किसी का देखा नहीं और हंसते ही रहे। साक्षीभाव में ही रहे। सत्वगुणी भी दिव्य, रजोगुणी भी दिव्य क्योंकि सर्वोपरि स्वरुप भी दिव्य और खुद भी दिव्य हो गए.....

अक्षरविहारीस्वामिजी बहुत निर्मानी हैं और ब्रह्म का गुण 'अमानित्वम्।'

—प.पू. काकाजी के आशीर्वाद 15.2.86

❋ स्वामीस्वरुप अक्षरविहारीस्वामिजी अखंड अक्षरधामरुप निरन्तर रहा ही करते हैं। इस पृथ्वी पर माहात्मयसभर जीवन वही अक्षरधाम का जीवन। तो पू.स्वामिजी को सात जड़कोटि तक के सुख-दुःख के मूल्यांकनों का जरा भी भार नहीं है, महाराज के संबंध वाला चैतन्यमुक्त- वह चाहे कैसे भी सात जड़कोटि के सुख-दुःख में झूलता हो अन्य संबंध वालों का अभाव लेता हो, तब भी स्वामिजी उसे मन पर लिए बिना उस अक्षरमुक्त को साक्षात् योगीबापा का ही साक्षात् स्वरुप मानकर, उसकी सेवा-महाराज का भाव रखकर किया ही करते है। संबंध वालों में प्रकृतिपुरुष तक के दोष हों, तब भी उनकी नजर में आते नहीं और स्वयं निरंतर अक्षरधाम की ज्ञान समाधि में रहकर ही बापा की खूब-खूब शोभा बढ़ा रहे हैं। वैसे अक्षरधाम की आदत हमें भी पड़े ऐसे आशीर्वाद वे दें, ऐसी प्रार्थना।

—आपके ही पप्पा के जय स्वामिनारायण

दि.13.2.96 महा कृष्ण-9

❋ बड़े पुरुष की ओर सदा नज़र रहे, वह साधक की सच्ची साधना है।

बापा को, पप्पाजी को राजी करने के लिए स्वामिश्री प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने मन-बुद्धि को कभी साथ दिया ही नहीं- वह उनकी सहज सरलता है, यही सच्चा स्वीकार है, यही अखंड संबंध है, यही सभी कल्याणकारी गुणों की प्राप्ति है। स्वामि अखंड संबंध से जीए और आज सबको जीवा रहे हैं....

—प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

15.2.87

इस 11,12 फरवरी के महामंगलकारी दिनों में साधकों की शिविर का आयोजन करके 13 फरवरी को सभी गुणातीत स्वरुपों की सेरे छाया में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की 60 वीं. हीरक जयंती सांकरदा में बहुत धूमधाम से मनाई.....

प.पू. पप्पाजी ने प्रातः शिविर में बताया कि **'ये अनादि साक्षात् स्वरूपों को लेकर ही बापा पधारे तो वे Original ही होंगे न !'** मोर के अंड़ो को भला डिज़ाइन थोड़ा करना पड़ता है? पू. ज्योति बहन, पू. तारा बहन के जीवन में से सभी बहनों को सीखना मिला है कि हमें जो स्वरुप मिला है, उसमें अतिशय प्रीति व विश्वास रखकर उनके हर एक चरित्र में दिव्यभाव रखकर हर एक वचन पाले, फिर उसके आगे कुछ भी गिनती ही नहीं, देह और देहभाव आड़े ही नहीं आने देना। आज भी दोनों स्वरुपों पू. पप्पाजी के पास छोटे बच्चे बनकर वर्तती हैं। साधकों के साथ मित्र की तरह वर्तती हैं। खुद को Total धिस दिया है, उसे ही अहोभाग्य मानती हैं।

शाम को संतों ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का माहत्म्यदर्शन करा कर सभा की पूर्णाहुति की.....

13 फरवरी-मुख्य महोत्सव का दिन.... चारों ओर आनंद-आनंद का दिव्य वातावरण.....स्टेज के मध्य में गुणातीत स्वरुपों के साथ हीरे के आकार के आसन पर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी विराजमान थे..... सर्वप्रथम प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने सभी गुणातीत स्वरुपों को हार अर्पण किया..... फिर गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा बनाया गया प.पू. पप्पाजी की 60 प्रसादी की वस्तुएं लेकर अत्यधिक भक्तिभरी भावनाओं का दर्शन करता हार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को पहनाया। जो सभी के दिल को खूब स्पर्श कर गया। प.पू.अक्षराविहारीस्वामिजी ने हार पहनते हुए प्रार्थना करी कि इन प्रसादी की वस्तुओं की जैसी महिमा है, वैसी ही महिमा संबंध वाले मुक्तों की सारे समाज की दृढ़ हो।

पू. विज्ञानस्वामी, पू. स्नेहलस्वामी की प्रार्थना के बाद प.पू. पप्पाजी ने आशीर्वाद बरसाए-**'संबंध वालों को योगीजी महाराज का ही स्वरुप मानकर सबकी सेवा कर**

लेने में अक्षरविहारीस्वामिजी 100% मार्क ले गए।'

फिर पू. महेन्द्र बापू ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का माहात्म्य दर्शन कराते हुए कार्ड देकर प्रार्थना की। पू. शांतिभाई ने प्रार्थना रखी कि '**आपने जैसी भक्ति करके प्रभु को राजी किया, इससे भी अधिक संबंध वालों को राजी किया। हम भी वैसा जीकर स्वरुपों की प्रसन्नता प्राप्त कर सकें ऐसी कृपा करना।'**

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने आशीर्वाद मांगे कि'**आपस-आपस में आत्मीयता और ओतप्रोतता बढ़े। सारा समाज एक होकर वर्ते-यही प्रार्थना।** '

पू. गुरुजी ने समुद्र की गहराई में छिपे आईसबर्ग यानि प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी कहकर उनकी छुपी साधुता गुणातीतभाव का दर्शन कराया। पू. कोठारीस्वामिजी (हरिधाम) ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की गुणग्राहक दृष्टि और दासत्वभाव-भक्ति का दर्शन कराया।

इसके पश्चात् 'राचे जेनां रंगमां' नामक गुजराती भजन की Audio Cassette का उद्घाटन प.पू.हरिप्रसादस्वामिजी के वरद् हस्तों द्वारा हुआ.....

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने आशीष प्रदान करते हुए कहा कि-'**सौ वर्ष की बंदगी से अधिक किसी ओलिया संत का 6 मिनट सान्निध्य है.....योगीबापा के प्रति मन, बुद्धि से परे का विश्वास रखा और हर प्रसंग पर सरलता रखकर स्वामी (पू. अक्षरविहारीस्वामिजी) जीये। जिससे संबंध बढ़ता गया-दासत्व प्रगट हुआ और प्रसन्नता मिल गई।'**

प.पू. साहेब ने बताया कि-'**अक्षरविहारीस्वामिजी का समग्र जीवन भक्ति की उमंग से रंगा हुआ है तो वे बापा, काका, पप्पा का स्वरुप बन गए हैं। संबंध वालों में यदि भगवान को देखें तो जड़ता टल जाती है और बुद्धि-भक्ति प्रगटती है....'**

पू. निर्मलस्वामिजी व प.पू. हरिभाई साहेब ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के पुराने प्रसंगों की स्मृति कराते हुए उनकी संकल्पसिद्धि का दर्शन कराया। इस प्रकार महोत्सव की सभा महिमा के दिव्य वातावरण से समाप्त हुई और आए हुए सभी भक्त भीतर से एक सूझ, बल, प्रेरणा, आनंद लेकर, महाप्रसाद लेकर लौटे.....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

479. देह स्वयं की नहीं और स्वयं की मानते हैं वही अज्ञान है। वह अज्ञान तो टले ही नहीं। जिस पर भगवान व बड़े साधु कृपा करें उसका अज्ञान टले।

प्र-5,294

480. गृहस्थ को जो शोभारुप है, वह त्यागी के लिए दूषण है- और त्यागी को जो शोभारुप है, वह गृहस्थ के लिए कलंकरुप है। इसी तरह सुहागिन व विधवा का फर्क भी समझना।

प्र-5,295

481. जिसका कागज आया हो वह स्वयं ही मिले और यूं आमने-सामने बैठा हो तो, कागज में प्रीति नहीं करनी। प्रगट भगवान की मूर्ति के आगे ज्ञान, वैराग्य, आत्मनिष्ठा यह सब खट्टी छाछ जैसे हैं, उसमें कोई माल नहीं....यूं एक भगवान के आधार बिना दूसरा सब खारा जल ही है।

प्र-5,296

482. ज्ञान हुआ- किसे कहा जाए? तो, शास्त्र सुनकर व किसी से बातें सुनने पर या किसी के संग से फिसल ना जाए-वह पक्का ज्ञान कहलाए।

प्र-5,297

483. प्रेमी भगवान में भी चिपके और दूसरे में भी चिपके। ज्ञानी हो वह दूसरे किसी में चिपके नहीं। हाँ, कोई गांठ पड़ जाए तो ज्ञानी भी चिपके। उस पर भीष्मपिता का दृष्टांत दिया कि वे ज्ञानी थे लेकिन पक्ष के कारण फिसल गए।

प्र-5,299

484. सूर्य के बराबर किसी को कहा नहीं जा सकता, वैसे ही इन भगवान को भी कोई उपमा नहीं दी जा सकती....

प्र-5,300

485. ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा और गद्दी पर हाथ रखते हुए इशारे से बताया कि-यह साधु और यह भगवान धरती पर कभी आए नहीं और कभी आएगें भी नहीं। हाँ, दूसरे आएगें।

प्र-5,301

486. शिक्षापत्री में सभी संशयों के हल लिखे हैं फिर भी किसी को कुछ संशय हो तो पूछ लेना। परन्तु इसका क्या अर्थ व उसका क्या अर्थ होगा, यह पूछना-करना रहा नहीं है। अब तो दाने खाकर भजन किया करना। शिक्षापत्री पालेगा उसे देह का दुःख नहीं आयेगा।

प्र-5,303

487. बहुत पुण्य से यह संबंध मिला है और ये सब हमारे साथ रहे हैं, परन्तु जिसे जितनी समझदारी होगी उसे उतना सुख आता होगा। इसमें पुराने-नए का कोई मेल नहीं।

प्र-5,308

488. इस साधु के प्रति जिसे जितना सद्भाव इतनी सद्वासना और जितना असद्भाव उतनी असद्वासना है, यूं समझना।

प्र-5,310

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhakar Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	31-C, Janta flats, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhakar Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKAR RAO
Signature of Publisher

Date: 25th Feb, 1996

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 1.3.96 शुक्रवार	एकादशी, व्रत
2.	दि. 4.3.96 सोमवार	होलिका दहन, ब्रह्मस्वरुप भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन
3.	दि. 5.3.96 मंगलवार	धुलेन्डी, होली
		प.पू. साहेब की जन्मजयंती
4.	दि. 7.3.96 गुरुवार	प.पू. काकाजी का स्वधामगमन दिन
6.	दि. 15.3.96 शुक्रवार	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'ANIRDESH' Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Chowdhry Mudran Kendra** 12/3, Sri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053